अध्याय 9

अ. घराना/बाज
ब. वाद्य वर्णन

परंपरा–उ.हाफिज अली, उ.अमजद अली, उ.अमान अयान अली

अ. घराना/बाज

मैहर बाज

मैहर बाज के प्रवर्तक बाबा अलाउद्दीन खान हैं। उस्ताद अलाउद्दीन खाँ का जन्म बांग्लादेश में 1862 में हुआ था। वे मुख्यतः एक सरोद वादक थे परन्तु ऐसा कोई भी वाद्य नहीं था जो वे नहीं बजा सकते हों, उन्होनें अपने जीवन काल में बहुत से गुरूओं से संगीत सीखा, परन्तु वे अंत में रामपुर के उस्ताद वज़ीर खाँ के शिष्य बने। वजीर खाँ बीनकार (वीणा वादक) थे अलाउद्दीन खान ने अपनी एक नई शैली विकसित की, जिसमें ध्रुपद शैली में आलाप जोड़ के साथ–साथ ख्याल शैली में विलम्बित गत के विस्तार का समावेश रहा। चूंकि उस्ताद अलाउद्दीन खान मैहर के महाराजा के दरबारी संगीतज्ञ थे और मैहर में ही निवास करते थे। अतः उनके द्वारा प्रतिपादित शैली को मैहर घराना या मैहर बाज कहा जाता है।

बांए से–पं.रवि शंकर, बाबा अलाउद्दीन खां, अली अकबर खाँ

उपरोक्त विशेषताओं के अतिरिक्त मैहर घराने के वादन में अन्य कई विशेषताऐं हैं। इस घराने की वादन शैली में स्वर विस्तार में आध्यात्म और श्रृंगार दोनों का समावेश है। इस शैली की एक अनूठी विशेषता यह भी है कि इसमें शुरूआत विलम्बित आलाप के साथ होती है तथा अंत अति द्रुत झाला के साथ। मैहर शैली को उनके सुयोग्य शिष्यों पुत्र उस्ताद अली अकबर खाँ पुत्री अन्नपूर्णा देवी और शिष्य पं. रवि शंकर ने परिष्कृत और परिवर्द्धित किया।

बाबा अलाउद्दीन खां, उ.अली अकबर खाँ,उ.आशीष खां

पं. रवि शंकर ने आवश्यकतानुसार सितार की बनावट एंव वादन शैली में परिवर्तन किया उन्होनें विलम्बित गत की लय को उस समय तक प्रचलित लय से और भी कम कर दिया तथा आलाप को विस्तार देने के लिए अतिमंद्र सप्तक का प्रयोग भी आरंभ किया। इसके लिए उन्होनें अति खरज तथा खरज पंचम के तार अपने सितार में जोड़े।

इस बाज (घराने) की विशेषताऐं–

? राग की शुद्धता पर विशेष ध्यान

? ध्रुपद शैली में आलाप जोड़

? गत वादन की अनूठी शैली

? तिहाइयों का समावेश

इस घराने के प्रमुख कलाकार–उस्ताद अलाउद्दीन खाँ, उस्ताद अली अकबर खाँ (सरोद), पं. रवि शंकर, पं. निखिल बनर्जी, पं. शशि मोहन भट्ट (सितार), अन्नपूर्णा देवी (सुरबहार), पं. पन्नालाल घोष (बांसुरी), हरि प्रसाद चौरसिया (बांसुरी), वी. जी. जोग (वायलिन)

इमदाद खानी बाज

बाज का अर्थ बजाने की रीति या शैली या Style होता है बाज एक प्रकार से शैली को ही प्रदर्शित करता है। इस प्रकार तंत्री वाद्यों के संदर्भ मे घराना, शैली और बाज एक दूसरे से पर्याय ही है।

इस शैली के प्रवर्तक उ. इमदाद खाँ थे इनका जन्म लगभग 1846 में हुआ, इनके पिता साहबदाद खाँ इटावा (उ.प्र.) के रहने वाले थे। इमदाद खाँ ने सितार वादन की अपनी अनोखी शैली विकसित की जिसे इमदाद खानी बाज कहा गया। इमदाद खान के सितार वादन में सपाट तानों का प्रयोग नहीं के बराबर है, परन्तु दाहिने हाथ से मिज़राब के बोलों से अद्भूत तैयारी के साथ चमत्कारी काम किया था। इनके द्वारा झाले को भी विभिन्न प्रकार से आकर्षक ढंग से प्रस्तुत किया जाता था।

उ.इमदाद खां

उ.इनायत खां

उ.विलायत खां

उ.शुजाअत खां

इमदाद खानी बाज की अन्य विशेषताएं निम्न है–

1. पाँच या छः स्वर की मींड का प्रयोग।
2. स्थाई अन्तरे का स्पष्ट प्रयोग।
3. दा रा दिर दिर, या दादारा दादारा दारा इत्यादि मिज़राब के बोलों को अत्यंत कुशलता और तैयारी के साथ बजाना।
4. तिहाई का प्रयोग अल्प, आलाप को सिलसिलेवार प्रस्तुत करना।
5. झाला में विशेष छंदो का प्रयोग

उस्ताद इमदाद खां के पुत्र इनायत खां भी बहुत बड़े सितार वादक हुए है। इनायत खां ने ही सबसे पहले सितार में तरब के तारों का प्रयोग शुरू किया था। इनायत खां के पुत्र उस्ताद विलायत खां इस सदी के महानतम सितार वादकों मे से एक है। इनायत खां के दूसरे पुत्र उस्ताद इमरत खां भी उत्कृष्ट सितार वादक है। विलायत खां के पुत्र शुजाअत खां इमरत खां के पुत्र इरशाद खां व निशात खां भी बेजोड़ सितार वादक है। उस्ताद शाहिद परवेज खान जो कि इमादाद खां के छोटे बेटे वहीद खां के पौत्र है वर्तमान में इस घराने का नाम रोशन कर रहे है। विलायत खां के शिष्य विमलेन्दु मुखर्जी व उनके पुत्र बुद्धादित्य मुखर्जी भी इस बाज के प्रतिनिधि कलाकार है।

उ.अब्दुल हलीम जाफर खां

जाफ़रख़ानी बाज

वर्तमान सितार वादको में उस्ताद अब्दुल हलीम जाफर खां का एक विशिष्ट स्थान है। इनका संबंध बीनकारों के घराने से रहा है। जाफ़रख़ानी बाज की कुछ विशेषताएं निम्न है –

1. आलाप में स्थाई और अंतरा ही बजाने की परम्परा है। संचारी और आभोग की नहीं।

2. जोड़ आलाप के बाद झाला नहीं बजाया जाता है। झालां द्रुतगत के बाद अन्त में ही बजाया जाता है।
3. गत का भराव मिजराब के बोलों के द्वारा किया जाता है। आधी चौथाई या पूरी गत का भराव मिज़राव के बोलो के द्वारा किया जाता है जो अत्यंत आकर्षक लगता है।
4. झाला बजाने के दौरान ठोक झाला भी बजाया जाता है।
5. वादन में कृन्तन, खटका, जमजमा, गिटकरी आदि का प्रचुर मात्रा में प्रयोग।

ब. वाद्य वर्णन

तंत्रवाद्य सितार : उद्‌भव एवं विकास

आधुनिक प्रचलित समस्त तंत्रवाद्यों में सितार अत्यन्त लोकप्रिय (Popular) वाद्य है। एक विषय के रूप में विद्यालय से लेकर विश्वविद्यालय तक तथा अधिकांश संगीत समारोह में इस वाद्य का प्रचार तथाप्रसार है। यही नहीं फिल्मी संगीत में तो इस वाद्य का भिन्न भिन्न प्रकार से प्रयोग किया जाता है।

विद्वानों के मतानुसार सितार का आकार प्रकार ईरानी तम्बूर और ''ऊँद'' के समान है। ऊँद एक पर्शियिन वाद्य है। सितार की उत्पति के संबंध में अनेक भ्रान्त धारणाऐं हैं। अनेक विद्धानों के अनुसार सितार ईरानी अथवा पर्शियन वाद्य है और मुसलमानों के भारत आगमन पर यह वाद्य भारत में आया। 13वीं शताब्दी में अल्लाउद्‌दीन खिलजी के समय के प्रसिद्ध कवि और संगीतज्ञ अमीर खुसरो ने इस वाद्य का निर्माण किया और इसका पर्शियन नाम सेहतार रखा।

लेकिन आधुनिक तंत्रवाद्य के सुप्रसिद्ध संगीतज्ञ स्व. डॉ. लालमणी मिश्र के मतानुसार 'सितार' अमीर खुसरों द्धारा बनाया गया वाद्य नहीं है। इस सम्बंध में इन्होंने निम्न तथ्य दिए हैं–

1. इनके मत से अमीर खुसरो निःसंदेह एक अच्छा संगीतज्ञ कवि और राजनीतिज्ञ था किन्तु तत्कालीन किसी भी ग्रंथ में ''सितार का आविष्कर्त्ता'' के रूप में उनका उल्लेख नहीं मिलता है।
2. सितार को जो लोग ईरानी वाद्य मानकर इसे सेहतार के नाम से पुकराते है तो ईरान में एकतार, दुतार, सेहतार आदि वाद्यों का प्रचार रहा है, लेकिन इन वाद्यों की बनावट भारतीय वाद्य सितार की बनावट से बिल्कुल भिन्न है। भारतीय वाद्य की अपनी विशेषता है जैसे घुड़च का चपटा होना तथा गूंजदार जवारी आदि का होना जो ईरानी वाद्यों में नहीं होता। अतः सितार अमीर खुसरों द्वारा आविष्कृत वाद्य नहीं है।

सितार का आकार–प्रकार व बनावट

1. सितार का तुम्बा जिसे घट भी कहा जाता है अधिकतर पनस की लकड़ी से बनाया जाता है। बहुत अच्छे किस्म के सितार का तुम्बा बड़े–बड़े कद्‌दू से बनाया जाता है। इस गोल व चपटे तुम्बे पर लकड़ी की लम्बी डाड लगी रहती है जो अंदर से पोली होती है।
2. सितार के तुम्बे के ऊपर एक पतला सा ढक्कन होता है उसे तबली कहा जाता है। इसी तबली पर घुड़च लगी होती है जिस पर सितार के तार खींचे जाते है।
3. सितार में सात खूटियों पर सात तार बाँधे जाते है जो तार गहन के द्धारा, घुड़च पर होते हुए तुम्बे के नीचे जिस स्थान पर बाँधे जाते हैं उसे लंगोट या कील कहा जाता है।
4. तारों के नीचे परदे बँधे रहते है, जिन्हें सारिका या सुंदरी भी कहा जाता है। ये परदे पीतल या गिलट अथवा लोहे के होते है। इन परदों की संख्या लगभग 18 से 20 तक होती है।

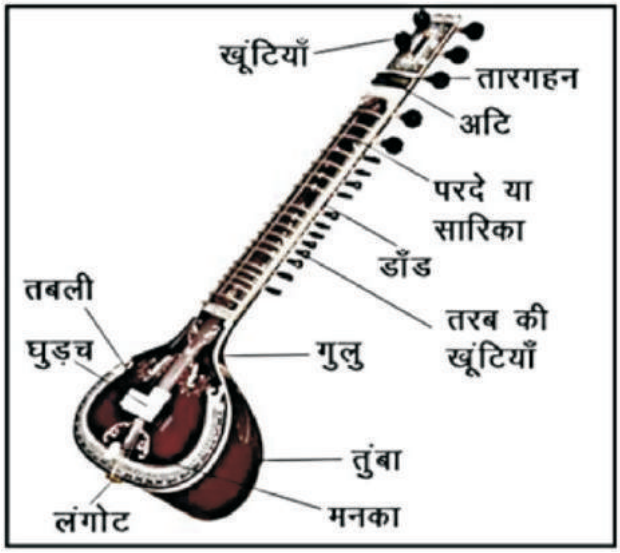

5. मुख्य सात परदों के नीचे कुछ और भी तार बाँधे जाते है जिन्हें 'तरब' कहा जाता है। ये 'तरब' राग के स्वरों के अनुसार मिलाई जाती है, जिससे सितार की आवाज और मीठी मधुर तथा गुंजन से युक्त हो जाती है। इन तरबों की संख्या लगभग 11 से 13 तक होती है।

6. इसके अतिरिक्त सितार की घुड़च पर झनकार पैदा करने के लिए धागे लगाये जाते है तथा सितार के प्रथम तार जिसे बाज का तार कहा जाता है उसमें नीचे की ओर मनका, या हाथीदाँत की चिड़िया तार में पिरोई जाती है जिसे ऊपर नीचे करके स्वरों का मिलान किया जाता है।

मिजराब

मिजराब–सितार को बजाने के लिए एक प्रकार की पक्के लोहे के तार की अंगूठी होती है जिसे दाहिने हाथ की तर्जनी अंगुली में पहना जाता है। इसी मिजराव से सितार की तंत्रियों पर प्रहार करके वादन किया जाता है।

सितार के तार या तंत्रियाँ एवं उनके स्वर

सितार मुख्यतः दो प्रकार के होते है–

1. साधारण सितार

2. तरबदार सितार

दोनों ही प्रकार के सितारों में मुख्य रूप से सात तार होते है, लेकिन साधारण सितार और तरबदार सितार में अंतर यह होता है कि साधारण सितार में केवल मुख्य सात तार होते है। जबकि तरबदार सितार में मुख्य सात तारों के अलावा, तरब के तार भी लगे होते है।

साधारण सितार, प्रारंम्भिक विद्यार्थियों के लिए होता है जबकि तरबदार सितार आगे के ऊँचे वादन के लिए होता है।

सितार का प्रथम तार लोहे (स्टील) के नम्बर दो या तीन का तार होता है। इसे बाज का तार कहा जाता है।

सितार का दूसरा व तीसरा तार 'जोड़ी के तार' के रूप में जाना जाता है। ये दोनों तार चूंकि एक ही स्वर में मिलाए जाते है इसीलिए इन्हें जोड़ी के तार के नाम से जाना जाता है। ये दोनों तार 28 नं. के होते है और पीतल एवं तांबे की धातु से बने होते है। वर्तमान में दो जोड़ी के तारों के स्थान पर एक ही तार का प्रयोग किया जाने लगा है।

चौथा तार स्टील का एक नम्बर का तार होता है जिसें पंचम का तार कहा जाता है।

पांचवा तार पीतल का होता है 26 या 22 नं. का तार होता है और इसे खरज व लरज पंचम का तार कहा जाता है।

छठा तार स्टील का जीरो नम्बर का होता है जिसे छोटी चिकारी कहा जाता है। साँतवा तार भी स्टील का होता है जिसे जीरो या दो नम्बर का तार कहा जाता है याचिकारी का तार कहलाता है।

सितार मिलाने की विधि

सुरो की दृष्टि से सितार दो प्रकार के होते है– (1) चल ठाठ वाला (2) अचल ठाठ वाला सितारा विद्वानों के मतानुसार चल ठाठ वाले सितार में 17 परदे या सारिकाएँ होती हैं जिन्हें आवश्यकतानुसार खिसका कर ऊपर नीचे के स्वर बना किए जाते है। जिनके स्वर क्रमशः म़ प़ ध़ नी़ नी़ स रे ग म म प ध नी स रे ग होते हैं

अचल ठाठ वाले सितार में प्रायः 19 परदे होते है जो खिसकाएं नहीं जाते। इसी कारण इसे अचल ठाठ वाला सितार कहा जाता है इसके परदे क्रमशः निम्न स्वरों में होते है–मै़ प़ ध़ ध़ नी़ नी़ स रे रेग ग म मे प धध नी नी सं रें गं। किसी–किसी सितार में 22 या 24 परदे होते है किन्तु बजाने की दृष्टि से 19 परदे वाला अचल ठाठ का सितार ठीक रहता है।

सर्वप्रथम सितार की जोड़ी के तार यानी दूसरे व तीसरे नं. के तारों को षडज स्वर (मन्द्र) में मिलाया जाता है।

इन दोनों तारों के पश्चात् सितार का पहला तार मिलाया जाता है जिसे बाज का तार कहते हैं। इस तार को जोड़ी के तारों के आधार पर मन्द्र मध्यम से मिलाया जाता है। अर्थात् प्रथम तार को मन्द्र सप्तक के मध्यम स्वर से मिलाया जाता है। चौथा तार पंचम स्वर से मिलाया जाता है। पाँचवा तार सबसे अधिक मोटा होता है और पीतल का बना होता है। जो अति मन्द्र सप्तक के पंचम सुर में मिलाया जाता है इसलिए इसे खरज–लरज का तार भी कहा जाता है।

छठे तार को छोटी चिकारी कहा जाता है यह तार बाज के तार के मध्य सप्तक के सा से मिलाया जाता है।

सातवें तार को चिकारी का तार कहते है। इस तार का तार सप्तक के सं स्वर से मिलाया जाता है। सितार की तरबें

तरबदार सितार की 'तरबे' (तार) जिस राग का वादन किया जाता है उसके स्वरों के अनुकूल मिलायी जाती है जिससे कि वादन में माधुर्य एवं गूंज पैदा होती है।

मुख्य बिन्दु

- सितार में छः अथवा सात मुख्य तार होते हैं। ग्यारह से तेरह तक तरब के तार होते है। परदों की संख्या 17 से 19 तक होती है।
- पहला मुख्य तार जिसे बाज का तार कहते हैं, मंद्र सप्तक के शुद्ध मध्यम में मिलाया जाता है।
- उस्ताद इमदाद खॉ, उस्ताद इनायत खॉ, पं0 रवि शंकर, उस्ताद विलायत खॉ, पं0 निखिल बनर्जी इत्यादि सितार के प्रमुख कलाकार हैं।
- मैहर घराने के प्रवर्तक कलाकार उस्ताद अलाउद्दीन खॉ थे। इमदादखानी बाज के प्रवर्तक उस्ताद इमदाद खॉ थे। ज़ाफरखानी बाज के प्रवर्तक उस्ताद अब्दुल हलीम ज़ाफ़र खॉ है।

अभ्यासार्थ प्रश्न

वस्तुनिष्ठ प्रश्न–

1. उस्ताद अलाउद्दीन खां के गुरु थे–
   (अ) उस्ताद हाफिज अली खां (ब) उत्साद वजीर खां
   (स) रविभांकर (द) अली अकबर खां
2. सितार बजाने के लिए दाहिने हाथ की अंगुली में किस यंत्र को पहना जाता है–
   (अ) मिरजाब (ब) जबा (स) चिकारी (द) मनका
3. इमदाद खां का जन्म कहाँ हुआ?
   (अ) इतावा (ब) इन्दौर (स) टामपुर (द) ग्वालियर

उत्तरमाला– (1) ब (2) अ (3) अ

प्रश्न–

1. सितार का आविष्कार किसने किया ?
2. सितार के विभिन्न अंगों के नाम लिखिए
3. पं0 रविशंकर के गुरू कौन थे?
4. उस्ताद विलायत खॉ के पिता का क्या नाम था।
5. सितार के तारों को मिलाने की विधि बताइये।
6. मैहर बाज की विशेषताएं बताइये।
7. इमदाद खानी घराने की वादन शैली के बारे में बताइये।

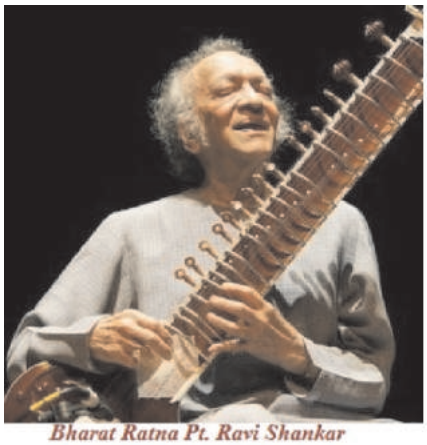
Bharat Ratna Pt. Ravi Shankar
(1920 - 2012)

अभ्यास कार्य

- सितार के विभिन्न अंगों का सचित्र चार्ट बनाकर कक्षा में लगाइये।
- विभिन्न घरानों के प्रमुख कलाकारों के बारे में जानकारी प्राप्त करना एवं उनके रिकार्डिंग सुनना।